विद्यालय नेतृत्व: सीखने-सीखाने की प्रक्रिया का नेतृत्व

हिन्दी
Lecture method ज़्यादा थी शिक्षकों में। Lecture method से ज़्यादा पढ़ाते थे। तो उसी समय एक A.L.M. पद्धति आयी, ALM method आयी। तो उसमें क्या है, बच्चों के groups बनाए जाते हैं। तो बच्चों को groups में बिठाना, और group presentation बच्चों के द्वारा। ये मैं पूरी तरह से कराने का प्रयास करती हूँ के बच्चे आएँ board पर। Board पर समझाते हैं बच्चे। एक group बनाते हैं और बच्चे आते हैं, board पर समझाते हैं। तो मैंने पूरा प्रयास किया के, बच्चों को ज़्यादा से ज़्यादा अवसर देना है। वो हिचक ना रहे उनमें, और चुपचाप बैठने की बजाय class में lecture method ना हो। बल्की बच्चे जो हैं presentation दें। जो भी उनका matter होता है, विषयांश होता है, तो उसको समझें। और उसपे जो है board पर आकर वो अपने question answer या उससे संबंधित जो भी उनको समझ में आया, वो presentation दें बच्चे। Teacher से तो पूछते ही हैं के आपका पाठ्यक्रम पूरा हो रहा है या नहीं, या बच्चे पढ़ रहे हैं या नहीं। लेकिन बच्चों के बीच में जाकर भी मैं पूछती हूँ कि भई, जो teacher ने बताया और जो बच्चे ने बताया, वो सही है? Same है? या नहीं? या कहीं ऐसा तो नहीं कि, बच्चे डर के कारण बोल रहें हो कि, ''नहीं! हमने पूरा पढ़ लिया, सब याद कर लिया।'' Teacher ने समझाया कि नहीं समझाया? Reality क्या है? और जब हमको कभी कभी दोनों में, अगर कोई ऐसा समझ में भी आता है कि, बच्चों को इसमें और पढ़ने की आवश्यकता थी, शिक्षक को और पढ़ाना चाहिए था, तो मैं शिक्षक को डाँटती नहीं हूँ कभी।